

शम्भु कुमार सिंह

यू.पी.एस.सी. (मैथिली) प्रथम पत्रक परीक्षार्थी हेतु उपयोगी संकलन

:: मिथिलाक परम्परागत सीमा बृहदविष्णुपुराण (५म शताब्दी)क मिथिला महात्म्य खंडमे वर्णित अछि जकर अनुवाद कवीश्वर चन्दा झा ऐ प्रकारेँ कएने छथि: ''गंगा बहथि जनिक दक्षिण दिसि पूर्व कौशिकी धारा पश्चिम बहथि गण्डकी उत्तर हिमवत बल विस्तारा कमला त्रियुगा अमृता धेमुड़ा बागमती कृतसारा मध्य बहथि लक्ष्मणा प्रभृति से मिथिला विद्यासारा।''

:: बृहदविष्णुपुराणमे मिथिलाक बारह गोट नामक उल्लेख भेटैत अछि:

मिथिला तीरभुक्तिश्च वैदेही नैमिकाननम।
ज्ञानशीलं कृपापीठं स्वर्णलांगलपद्धतिः।।
जानकी जन्मभूमिश्च निरपेक्षा विकल्मषा।
रामानन्दकरी विश्वभाविनी नित्यमंगला।।

:: मिथिलाक आदि शासक विदेहक नाओंपर मिथिलाक नाओं 'विदेह' पड़ल।

::'तिरहुत' नामक उल्लेख सर्वप्रथम पुरुषोत्तमदेवक 'त्रिकाण्डकोश' (१२म शताब्दी) मे भेल अछि।

:: विदेह राज्यकुलक मिथिलापर शासनक समए ३००० ई.पू.सँ ६०० ई.पू. धरि अनुमानित अछि।

:: मिथिलामे पञ्जी बेवस्थाक सम्पादन कर्णाटवंशीय नरपति हरिसिंहदेवक द्वारा प्रारंभ भेल।

:: सप्तरत्नाकरक रचयिता छलाह चण्डेश्वर ठाकुर।

:: मिथिलाक प्रथम कर्णाटवंशीय शासक छलाह 'नान्यदेव' (१०९७ ई.)।

:: खण्डबला राजकुलक स्थापना म.म. महेश ठाकुर द्वारा १५५७मे भेल।

:: मिथिलापर ओइनवार राज्यवंशक शासन चौदहम शताब्दीक मध्यमे आरंभ भेल।

:: मिथिलामे भस्मसँ अंकित त्रिपुण्ड शिवभक्तिक, लम्बाकार श्रीखंडक टीका विष्णुभक्ति एवं सिन्दूरक ठोप शाक्त भावनाक प्रतीक मानल जाइत अछि।

:: मिथिलाक्षरक विकास तान्त्रिक यन्त्रसँ मान्य अछि। ई मानल जाइत अछि जे तिरहुताक्षरक आरंभ जइ मंगल चिह्न 'आँजी' सँ होइत अछि से तान्त्रिक कुण्डलनीक बोधक थिक।

:: मिथिलामे बिआहक अवसरपर गाओल जाइबला 'जोग' तन्त्रसँ सम्बद्ध मानल गेल अछि।

:: मिथिलाक धार्मिक जीवनक मुख्यधारा शिव ओ शक्तिमूलक थिक।

:: मैथिलीय रागरागिनीक प्राचीनतम उल्लेख सिद्ध लोकनिक 'चर्यापद'मे उपलब्ध होइत अछि।

:: कर्णाटनरपति म. नान्यदेव (१०९७ ई.पू.) मिथिलामे अपन राज्य स्थापित करबाक पश्चात् 'सरस्वती हृदयालंकार' नामक संगीतग्रंथ लिखल जइमे सर्वप्रथम ओ मैथिलीय रागरागिनीक उल्लेख क्रमबद्ध रीतिएँ कएल।

:: मैथिलीय संगीतक सक्रिय गतिविधि ओ विकास-प्रसारक दृष्टिसँ म. हरिसिंहदेव (१२९६-१३२६)क राज्यकाल विशेष रूपेँ उल्लेखनीय अछि।

:: 'तिरहुति' श्रृंगाररसक मधुरगीत थिक, जइमे नायक-नायिकाक संयोग-वियोगक रागात्मक वर्णन होइत अछि।

:: 'बटगवनी'मे सखी सबहक संग समागम-गृहमे पतिसँ अभिसारक हेतु जाइत नायिकाक वर्णन होइत अछि।

:: 'गोआलरी'क विषए-वस्तु होइत अछि गोपी सबहक संग कृष्णक नोंक-झोंक एवं केलिकौतुक।

:: 'रास'मे गोपी सबहक संग कृष्णक रासलीलाक वर्णन होइत अछि।

:: रासक सर्वप्रथम रचयिता छथि 'साहेबरामदास'।

:: मिथिलाक लोकवाणी हेतु 'मैथिली' शब्दक प्रयोग सर्वप्रथम कोलब्रुक १८०१ ई.मे कएल, परन्तु ऐ नामकेँ प्रसिद्ध करबाक श्रेय मैथिली भाषा साहित्यक आदि उन्नायक ग्रियर्सन महोदयकेँ छन्हि।

:: कालानुसारेँ मूल भारोपीय भाषाक समए २५०० ई.पू. मानल जाइत

अछि।

:: प्राचीन भारतीय आर्यभाषाक इतिहास १२०० ई.पू. सँ मानल जाइत अछि।

:: बौद्धधर्मक सुप्रसिद्ध ग्रंथ 'ललितविस्तार'मे ''वैदेहीलिपि''क उल्लेख अछि जकरा मैथिली लिपिक प्राचीनतम स्वरूप कहल जा सकैत अछि।

:: कोनो युगमे शिष्ट ओ परिनिष्ठित साहित्यसँ भिन्न जे रचना होहत अछि से ओइ युगक लोक-साहित्य कहबैत अछि।

:: दीर्घ आख्यानपर आधारित गेयात्मक कथा 'लोकगाथा' कहल जाइत अछि।

:: मैथिलीक किछु प्रमुख लोकगाथा काव्य थिक– लोरिकाइन, सलहेस, अनंगकुसुमा, दुलरादयाल, नैका बनिजारा, दीनाभद्री, रईया रणपाल आदि।

:: 'वर्णरत्नाकर' निर्विवाद रूपसँ मैथिली साहित्यक प्रथम उपलब्ध गद्य ग्रंथ थिक।

:: विद्यापतिक 'पुरुषपरीक्षा', पंचतंत्र, हितोपदेश आदि परंपराक संस्कृत नीतिकथा थिक।

::विद्यापतिक 'कीर्तिलता' अवहट्टक गद्यपद्यमय ग्रंथ थिक।

::'गोरक्षविजय' विद्यापतिक संस्कृत नाटक थिक, जइमे मैथिली पद सेहो प्रयुक्त भेल अछि।

::'विशुद्ध विद्यापति पदावली' विद्यापतिसँ कम-सँ-कम एक शताब्दीक पश्चातक संकलन थिक।

::१८७९ ई.मे दरभंगा राज हाई स्कूलक स्थापना भेल छल।

::१९६६ ई.मे मैथिली भारतक प्रमुख साहित्यिक भाषाक रूपमे साहित्य अकादेमी, दिल्ली द्वारा स्वीकृत भेल।

::मैथिली अकादमीक स्थापना १९७६ ई.मे भेल।

::नाटकमे आंगिक, वाचिक, आहार्य, तथा सात्विक चारू प्रकारक अभिनय आवश्यक होइ छै।

::'अंकियानाट'क आदि रचयिता छलाह शंकरदेव (१४४९-१५६९)।

::मिथिलामे 'कीर्तनिञानाच'क परिपाटीक आरंभ नवद्वीपक कीर्तनमंडलीक प्रभावसँ भेल १७म शताब्दीक आदिमे।

(स्त्रोत: मैथिली साहित्यक इतिहास, डॉ. दुर्गानाथ झा 'श्रीश')